

SAJMS



VOLUME-16

JANUARY 2022, VOL. 16, NO1

Mailing Address

Business Manager 4830/24, Ansari Road Darya Ganj

New Delhi-110002

India

Principal Contact

Dr. Anil Mehra

Chief Editor

Regional Office, South Asia Management Association 4830/24, Ansari Road

Darya Ganj New Delhi-110002 India

Phone: 9644794563 Email: chiefeditorsajms@gmail.com



ABOUT SAJMS

South Asia Journal of Multidisciplinary Studies (SAJMS) is a international double – blind peer reviewed, refereed and Indexed journal published in English, Hindi for scholars, practitioners, and students . The Journal invites original research articles, book reviews, commentaries, correspondence, review articles, technical notes, short communications, case study, books, thesis and dissertation relevant to the fields of Agricultural Science, Ayurved, Biochemistry, Biotechnology, Botany, Chemistry, Commerce, Computer Science, Economics, Engineering, Environmental Sciences, Food Science, Geology, Geography, History, Horticulture, Library & Information Science, Linguistics, Literature, Management Studies, Mathematics, Medical Sciences, Microbiology, Molecular Biology, Physical Education, Nursing, Pharmacy, Physics, Social Science, Zoology. All research papers submitted to the journal will be double – blind peer reviewed refereed by members of the editorial board.

INDEX

South Asia Journal of Multidisciplinary Studies is included in different indexing agencies, Google Scholar, Directory of Research Journal Indexing, BASE-Bielefeld Academic Search Engine, DOAJ etc.

CALL FOR PAPERS (February, 2021)
SOUTH ASIA JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES
ISSN: - 2395-1079

All researchers are invited to submit their original papers for peer review and publications. Before submitting papers to GJMS, authors must ensure that their works have never published anywhere and be agreed on originality and authenticity of their work by filling in the copyright form. Written manuscript in GJMS Format should be submitted via online submission at <http://www.gjms.co.in/index.php/SAJMS> or chiefeditorsajms@gmail.com

Book publication is one of the foremost factors to boost up the research scholars, academician, students and intellectuals to reveal all their studies into every ones hand. Conventionally, publication transforms thoughts into hand written document, but now thoughts are converted to digitized document. Publication means reveal “one to all”. Book publication is sharing their thoughts, views, ideas in any field of their interest. There are academic publishers, professional publishers and some has own idea of interest in self-publishing their script, novel and story books. Global Journal of Multidisciplinary Studies supports their needs in publishing their book to expose globally.

Mailing Address

Business Manager, 4830/24, Ansari Road Darya Ganj

New Delhi-110002

India

Principal Contact

Dr. Rajiv Kaushal

Chief Editor

Regional Office, South Asia Management Association 4830/24, Ansari Road Darya

Ganj New Delhi-110002 India

Phone: 9644794563

Email: chiefeditorsajms@gmail.com

Editorial Board & Advisory Member

1. **Dr. Sharif .**, IIT Kanpur (U.P.), India
2. **Dr. Devendra Kumar Patel**, Assistant Professor, Rural Technology Department, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, (A Central University), Bilaspur (Chhattisgarh) – India., India
3. **Dr. Atul Dubey**, Chairman,Board of Study(Management) Rani Durgawati University,Jabalpur, India
4. **Dr. Neetu Yadav**, India
5. **Dr. Nehra Chourasia**, Neha Chaurasia Senior research fellow Dept. of Forensic Medicine IMS-BHU Varanasi., India
6. **Dr. Vipin Ashok**, State Forensic Science Laboratory, Lucknow (U.P) India, India
7. **Dr. Dharendra Pandey**, Assistant Professor in Department of Information Technology,S- 518, Sanskriti Enclave, Udyan- II, Eldeco, Rae-Bareli Road, Lucknow- 226025, India
8. **Dr. Shoeb Ahmad**, Section of Genetics, Department of Zoology, Aligarh Muslim University, Aligarh-202002 (UP), India, India
9. **Dr. Uroos Fatima Rizvi**, , Swami Vivekanand University, Sagar: Rani Durgawati University, Jabalpur, India, India
10. **Dr Mohan kumar ahirwar**, Barktulla university, India
11. **Dr. Rudra Pratap**, Professor,OIMT,Damoh, India
12. **Dr. Anita Agrawal**, Guest faculty, Govt. P.G. College, Barela Jabapur M.P., India

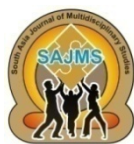


TABLE OF CONTENTS

1.	Social Change and its Decisive Role in the Short Stories of Thomas Hardy Dr. Saraswati Singram	1
2.	Level and Trends of Irish Culture and Politics : A Study of W.B. Yeats's Selected Poems from The Wild Swans at Coole (1919) Dr. Anita Jhariya	4
3.	Environmental Effect of Pulp And Paper Mill Effluents On Fresh Water Fishes Dr. Parwati Kushram	8
4.	Ecology and Enzyme Based Biosensors Dr. Seema Dhurvey	12
5.	Biodiversity and Water Quality Assessment of Narmata River at Mandla Town (Madhya Pradesh) Dr. Zoodik Kujoor	15
6.	अमृतलाल नागर तथा श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित नारी शोषण का तुलनात्मक विश्लेषण डॉ. एस. पी. धूमकेती	18
7.	संस्कृत नाट्य में लोकाचार का 'मृच्छकटिकम्' नाटक के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन डॉ. पी. एल. झारिया	21
8.	भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में धर्म-निरपेक्षता : संवैधानिक परिप्रेक्ष्य का मूल्यांकन डॉ. अनीता मेश्राम	24
9.	Level And Trends Of The Need for Studying Political Science Dr. T.P. Mishra	28
10.	Commercial Development and Trends of Foreign Direct investment in India Dr. Arjun Singh Baghel	32
11.	Commercial Development and Challenges faced by Women Entrepreneurs in India Dr. Shrikant Shrivastava	37
12.	सामाजिक पर्यावरण एवं जनजातीय समाज की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन डॉ. श्रीमति नसीम बानो	41
13.	Ecology Isolation and Identification of Endophytic Fungi from Some Important Medicinal Plants of Jabalpur, Madhya Pradesh Dr. B.L. Jhariya	46
14.	Economic Development and Services Tax in India : An Overview Dr. Saheda Khan	50
15.	जनपद बालाघाट में ग्रामीण ऋणग्रस्तता की समस्या के संदर्भ में सहकारी विकास बैंकों की भूमिका (गत पाँच वर्षों के संदर्भ में) डॉ. कुसुम लता उइके	54
16.	Social Environment and Drug Discovery: A Pathway for Drug Designing Dr. Mukesh Katakwar	59
17.	Evaluation of Antimicrobial Potential of Methanolic Extracts of Indian Spices Against Urinary Tract Infection Dr. Aruna Pertete	62
18.	Study of Nano-particles as Anticancer Chemotherapeutic Agents Dr. Mamta Sharma	67
19.	H.R.M. Roles converted into Green Human Resources Management (GHRM) Roles Dr. Shobha Mishra	70
20.	Research And Theory of Relativity	77

	Dr. Promod Kumar Meshram	
21.	Role of Women in Gram panchyat : A Case Study of Lakhnadon Block in Seoni District Kalpna Ingley	80
22.	प्राचीन सल्तनतकालीन भारत में इतिहास लेखन एवं शोध : एक विश्लेषण डॉ. राजेश ठाकुर	83
23.	हिन्दी साहित्य और समकालीन हिन्दी कविता: अस्मिता, चेतना और यथार्थ डॉ. एस. पी. बेलवंशी	88
24.	लघु वन उपज तेंदू पत्ता संकलन का संखिकीय विश्लेषण : मंडला जिले के विशेष सन्दर्भ में डॉ. जगदीश प्रसाद शिववंशी	92
25.	समग्र नकद फसलों की उत्पादन प्रवृत्ति की विश्लेषणात्मक समीक्षा डॉ. राशी गौतम	96
26.	जैविक कृषि उत्पादकता, मृदा उर्वरता एवं पर्यावरण डॉ. जगत राम झारिया	105
27.	Upper (Lower) Weakly d-e-Continuous Multi-Functions Dr. Pratibha Gupta	115
28.	On Generalized Schur Numbers of the Equation $x + ay = z$ Dr. Seema Maraskole	119

अमृतलाल नागर तथा श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित नारी शोषण का तुलनात्मक विश्लेषण

डॉ. एस. पी. धूमकेती
हिन्दी विभाग

रानी दुर्गावती शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मण्डला (म.प्र.)

प्रस्तुत शोधपत्र में अमृतलाल नागर तथा श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित नारी शोषण का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। हिन्दी साहित्य के दोनों ही वरिष्ठ उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में पुरुष वर्ग द्वारा स्त्रियों पर किए गए अत्याचारों और उन पर किए गए विविध प्रकार के शोषण का बड़े ही हृद्य भेदक ढंग से चित्रण किया है। नारी शोषण का चित्रण श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में अपेक्षाकृत कम हुआ है, जबकि अमृतलाल नागर के उपन्यासों में इस गंभीर समस्या का विस्तार से चित्रण किया गया है, जो तत्कालीन समय और समाज की सच्चाई के साथ ही नारी शोषण के विशेष संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र में अमृतलाल नागर तथा श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित नारी शोषण का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा रहा है। नारी हमारे समाज में सबसे अधिक पीड़ित एवं प्रताड़ित की जाती है, जिससे समाज में नारी शोषण जैसी समस्या उत्पन्न हो जाती है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से हमारा ध्यान इनकी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। जिनमें अमृतलाल नागर एवं श्रीलाल शुक्ल का नाम सर्वश्रेष्ठ आता है। जहाँ अमृतलाल नागर ने लगभग अपने सभी उपन्यासों में नारी शोषण का चित्रण किया है, वहीं श्रीलाल शुक्ल ने भी अपने कई उपन्यासों में इस समस्या को प्रस्तुत किया है।

वर्तमान समाज में भी नारी की स्थिति दयनीय ही है। पुरुष का नारी के प्रति यही दृष्टिकोण रहा है कि नारी उसकी संपत्ति है और इस संपत्ति का इच्छानुसार उपयोग करना पुरुष का जन्मसिद्ध अधिकार है। अमृतलाल नागर के भूख उपन्यास में शीबू नामक पात्र है, जो स्त्री को केवल अपनी संपत्ति समझता है। उसका कहना है, "पत्नी पति की मिल्कियत है और इसीलिए कुदरतन उसे सर्वाधिकार प्राप्त है। बच्चा अपने खिलौने को जैसे जी चाहे खेले, उसे तोड़ भी डाले— इसमें खिलौने को शिकायत क्यों हो। 9) भूख उपन्यास की सम्पूर्ण कहानी भूख से छटपटाती आम जनता की कथा तो है ही, साथ ही इसमें नारी की विवशताओं के चित्र भी देखने को मिलते हैं। अकाल के कारण कई स्त्रियों को वेश्या बनना पड़ता है, उनको अपनी इज्जत से हाथ धोना पड़ता है। धन के मोह में नुरुद्दीन अपने साथियों के साथ मिलकर भूखी और लाचार स्त्रियों का व्यापार करते हैं। "दो मुट्टी चावल के लिए औरतें बेची जाने लगी। बुढ़ियों को धर्मशाला में दीन—धर्म के उपदेश सुनने के लिए भरती नहीं किया जाता था। धर्मशाला का रहस्य मालूम हो गया, पर औरतों की अस्मत् जाय तो जाय—खाने को मिले। बहु—बेटियों को वेश्या बनने दो। आबरू जाती है, तो जाने दो। पेट से बढ़कर दुनिया में कोई चीज नहीं। बेचो! बेचो!"

इस उपन्यास में प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति समान थी। थोड़े से चावल के लिए स्त्रियों को एक मालिक से दूसरे मालिक के हाथों बिकना पड़ता है। शीबू की बहन तुलसी भी भूख से बचने के लिए नुरुद्दीन के हाथों ही बिकना पसंद करती है। इस उपन्यास में केवल तुलसी ही नहीं, अपितु सभी मध्यवर्गीय परिवारों की बेटियाँ इसी तरह बिकने के लिए विवश हो जाती हैं। उदाहरण— "आबरू नाम की कोई चीज इस वक्त तक उनके साथ नहीं रह गई थी। उनकी बहु—बेटियाँ भी खुले आम धर्मशालाओं और अनाथालयों में बेची जाने लगी थी। आलोच्य उपन्यास का नायक पांचू गोपाल स्त्रियों की दयनीय दशा को देखकर कहता है, "उन्हें भी कहने का हक है, उन्हें भी जीने का हक है। पुरुष इस हद तक स्त्री को अपनी दासी बनाकर नहीं दबासकता। आगे वह कहता है— "हमें सबका समान अधिकार स्वीकार करना ही होगा। जब तक एक भी स्त्री दासी रहेगी, उसके पेट से दास ही उत्पन्न होंगे। दासता जीवन को मृत्यु की जड़ता से बांध देती है। यह अकाल हमारी दासता का परिणाम है। यह अकाल मनुष्य की दासता का परिणाम है।"

बूंद और समुद्रउपन्यास में भी नारी शोषण का चित्रण किया है। इस उपन्यास में नारी की सामाजिक-आर्थिक स्वतंत्रता एवं नारी-पुरुष के समान अधिकारों का प्रश्न उठाया गया है। इस उपन्यास की पात्र 'वनकन्या' समाज में स्त्री-पुरुष की समानता एवं स्त्री की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करती है। वह उन सब नैतिक मूल्यों और सामाजिक धारणाओं का विरोध करती है, जो नारी के उज्ज्वल भविष्य में बाधक बनते हैं। उसका कहना है— "हमें अब झूठे धर्म का भय, और झूठी आबरू का मायाजाल तोड़ कर कहना भी होगा, और लड़ना भी होगा। आर्थिक पराधीनता के कारण आज के मध्यवर्गीय समाज में नारी कहीं आत्महत्या करने पर विवश होती है, तो कहीं मानसिक क्लेश सहने को मजबूर होती है। वनकन्या' के अनुसार— "स्त्री और पुरुष आमतौर पर एक दूसरे की इज्जत नहीं करते हैं। स्त्री आमतौर पर आर्थिक दृष्टि से पुरुष की आश्रिता है, उसका व्यक्तित्व स्वतंत्र नहीं। इस देश की स्त्रियाँ सदा से यह दुःख भार उठाती आई हैं। सीता को भी सहना पड़ा था, द्रौपदी को भी। वर्तमान समाज में नारी पर हुए अत्याचारों एवं शोषण को देखते हुए उपन्यासकार स्वयं कहते हैं— "नारी होना आज की सामाजिक स्थिति में अभिशाप है।

हमारे समाज में नारी हर समय व्यवस्था की रूढ़ियों का शिकार होती रहती है। उसके प्रति अत्याचार एवं दुराचार हमारे समाज की एक शर्मनाक समस्या है। वर्तमान समाज में नारी की स्थिति पर इसी उपन्यास का एक अन्यपात्र महिपाल कहता है "मौजूदा समाज में नारी की एक अजीब सामाजिक स्थिति है। खासतौर से हमारे देश में तो यह विचित्रता और भी स्पष्ट होकर झलकती है। हम देखते हैं कि औरत इस समय आम घरों में, किसी न किसी रूप में बेइज्जती का जीवन बिताती है। छोटे आदमी कहलाने वाले को कौन कहे, बड़े-बड़े सम्य रईसों और पंडितों के घरों में भी स्त्री-जाति का दमन होता है, तरह-तरह से उनका अपमान होता है। आम-जहनियत में स्त्री घर का काम-काज, सबकी सेवा टहल करने वाली और पुरुष के भोग की वस्तु होने के अलावा और कुछ भी नहीं।

'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास में भी नागर जी ने नारी शोषण का चित्रण किया है। इस उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर विभिन्न पात्रों द्वारा नारी की सामाजिक स्थिति को उद्घाटित किया गया है। उपन्यास की नायिका 'निर्गनिया' के माध्यम से नारी जीवन की समस्याओं का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया गया है। नारी जीवन की विडम्बनाओं के संबंध में निर्गुनिया कहती है, "बाबूजी, मैं पक्ष लेकर बात नहीं करती, पर यह सच है कि दुनिया में दूर-दूर देशों तक, औरतों से बढ़कर और कोई भी ज्यादा गुलाम नहीं है। मैंने ब्राह्मण भी देखा, मेहतर भी देखा। मरद सब जगह एक है।

अमृतलाल नागर की भांति श्रीलाल शुक्ल ने भी नारी जीवन की पीड़ा एवं उस पर हुए शोषण का वर्णन अपने उपन्यासों में किया है। सूनी घाटी का सूरज उपन्यास में उन्होंने गाँव की महिलाओं की ऐसी स्थिति का वर्णन किया है, जो चोरी करने में भी अपना सुख पाने का प्रयास करती हैं। जैसेदृ "सासों के डर से चुराकर वे घी-दूध व शक्कर खा सकती हैं। पति से बचाकर घर का अनाज बेच सकती हैं। घर की चहारदीवारी में बंद रहकर चौबीसों घंटे गंदे लड़कों को खिलाने में, खाना पकाने और बर्तन मलने में, अनाज की लूट-पीस में सारा दिन बिताने के बाद अपनी ऊब और घुटन मिटाने का उनका यही साधन है। इससे पैसा मिलता है, स्वास्थ्यवर्धक प्रसन्नता आती है। इसी उपन्यास में ठाकुर राजेश्वर सिंह की पुत्री 'बेबी' का शोषण उसके ड्राइवर 'फिलिप' द्वारा किया है। वह उसे प्रेम का झांसा देकर शारीरिक शोषण करता है। फिलिप उसे अपनी बाँहों में समेटे हुए धीरे-धीरे कह रहा था, "यह सातवाँ तरीका है। तुम्हारे ऑठ पार्टनर के ओठों पर क्रास बनाते हुए मिलें। — इस तरह, स्टाइल नंबर सेवेन। श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्यासों में नारी के जिस रूप का चित्रण किया है, वह अहंग्रस्त है। वह अपनी पीड़ा एवं दुःख को मन ही मन सहन करती है, जिससे वह कुंठा, तनाव एवं घुटन की शिकार हो जाती है। शुक्लजी ने सीमाएँ टूटती हैं' उपन्यास में जूली नामक एक स्त्री पात्र पारिवारिक कठिनाइयों तथा गरीबी के कारण शोषण का शिकार हो जाती है। वह एक अंग्रेजी दुकान पर टाइपिस्ट का काम करती थी। उन दिनों घर में कई दिक्कतें थीं निकम्मा भाई,शाराबी बाप बीमार माँ आमदनी बढ़ाने के लिए उसने खास-खास ग्राहकों से मिलना शुरू किया। वे दिल्ली या चंडीगढ़ की ओर से आते थे और उन्हें ज्यादातर अंग्रेजी बोलने वाली ईसाई लड़कियाँ पसंद थीं।

"राग दरबारी" उपन्यास में भी स्त्री उत्पीड़न का वर्णन किया गया है, जिसमें दिखाया यह गया है कि पुरुषों की दृष्टि में स्त्री का कोई महत्त्व एवं मूल्य नहीं है। इस उपन्यास की पात्र बेला की असहाय

स्थिति का चित्रण तब होता है, जब गयादीन वै।जी के दरबार में उसकी इज्जत के लिए गिडगिडाता है। यथा— गयादीन ने हाथ जोड़कर गिडगिडाते हुए कहा, महाराज मेरी बनी हुई बात न बिगाड़ो। मेरी बिटिया पर ऐसे ही क्या कम मुसीबतें हैं। माँ बचपन ही में मर गई थी। किसी तरह पाल—पोसकर बड़ा किया है। शहर में अग्रवाल वैश्यों का एक परिवार है। वे लोग इसका उद्धार करने को तैयार हैं। लड़का पढ़ा—लिखा, नौकरी में लगा है। पंद्रह दिन बाद की ब्याह की तिथि है। अब इस बीच में तुम सब बड़े आदमी अगर झूठमूठ उसकी बदनामी करने लगेंगे, तो उसका क्या होगा महाराज।

अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि अमृतलाल नागर और श्रीलाल शुक्ल जैसे उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में पुरुष वर्ग द्वारा स्त्रियों पर किए गए अत्याचारों और उन पर किए गए विविध प्रकार के शोषण का बड़े ही हृद्य भेदक ढंग से चित्रण किया है। नारी शोषण का चित्रण श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में अपेक्षाकृत कम हुआ है, जबकि अमृतलाल नागर के उपन्यासों में इस गंभीर समस्या का विस्तार से चित्रण किया गया है, जो तत्कालीन समय का प्रतिबिम्ब है।

संदर्भ :

- (1) नागर, अमृतलाल : भूख, पृ. 212
- (2) वही, पृ. 156.
- (3) वही, पृ. 186.
- (4) वही, पृ. 150—51.
- (5) वही, पृ. 150—51.
- (6) नागर, अमृतलाल : बूंद और समुद्र, पृ. 143.
- (7) वही, पृ. 247.
- (8) वही, पृ. 247.
- (6) वही, पृ. 307.
- (10) नागर, अमृतलाल : नाच्यौ बहुत गोपाल, पृ. 229.
- (11) शुक्ल, श्रीलाल : सूनी घाटी का सूरज, पृ. 28.
- (12) वही, पृ. 98.
- (13) शुक्ल, श्रीलाल : सीमाएँ टूटती है, पृ. 25.
- (14) राग दरबारी, पृ. 293.